भारतीय फिल्में और सामाजिक परिपेक्ष्य

Subhash Sharma* Virender Singh**

फिल्म समाज और सभ्यता को चित्रात्मक रूप में दर्शाता एक माध्यम हैं। इस के साथ साथ यह विचारों को सृजनात्मक और कलात्मक स्वरूप में प्रस्तुत करने का माध्यम है। इस माध्यम का प्रभाव प्रत्येक आयुवर्ग के दर्शाको पर गहराई के साथ पड़ता है। फोटोचित्रों के निर्माण के साथ ही आरम्भ होने वाले इस माध्यम को जनसंचार का कैमिक्ल संचार माध्यम भी कहा गया। प्रत्येक देश की अपनी भाषा और बोली होती है। पर यह माध्यम इन सभी प्रकार की भाषाओं के द्वारा मन के भावों और विचारों को प्रभावपूर्ण रूप से दर्शको के दिलों–दिमाग पर छा जाता है। विश्व को एक अलग ही अंदाज में मनोरंजन प्रदान करने वाली फिल्में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ कला को दर्शाती है। 20वीं सदी से आरम्भ होने वाले इस माध्यम को 100 वर्ष हो गए है। और यह आज भी उसी आर्कषण और उत्सुकता के साथ लोगो के बीच लोकप्रीय है। वतर्मान मे इस माध्यम द्वारा प्रतिवर्ष करोड़ों ही नही अरबों डॉलर का व्यापार होता है। जुलाई 1886 के बंबई के वॉटसन होटल में शहर के श्रेष्ठ वर्ग के सामने 20वीं सदीं के चमत्कार को चलचित्रो के माध्यम से प्रदर्शित किया। ल्यूमियर भाईयों के इस करिश्में को कामयाबी मिलते अधिक समय नहीं लगा।

भारतीय सिनेमा को विश्व के सिनेमा उद्योग में एक विशेष स्थान बनाए हुए है। प्रत्येक वर्ष भारतीय और विश्व के दर्शको को विभिन्न भाषाओं में 1000 से अधिक फिल्में विभिन्न वर्गो में प्रर्दशित की जाती हैं भारतीय सिनेमा उद्योग द्वारा। प्रारम्भी दौर मे ही भारतीय सिनेमा को चमत्कार करने वाले निर्माता और निर्देशक मिले जो फिल्मों के प्रति अटूट लगाव रखते थे। यहॉ तक की अपनी निजी संपति ही क्या पत्नि तक के गहने भी बेच कर फिल्म बनाने से भी नही हिचके और ऑसक पुरस्कार प्राप्त करने वाले फिल्में विश्व कों दी। भारतीय निर्माता–निर्देशको ने व्यक्तिगत, प्यार, समाजिक–राजनैतिक, धार्मिक, पौराणिक, अपराधिक तथा मसाला विषयों पर रचनात्मक फिल्में बनाई है। दर्शको की रूचि को ध्यान प्रत्येक तरह की फिल्मों में रखा जाता

***Assistant Prof. Govt College Jagdishpura, Kaithal**
****Assistant Prof. Govt College Jagdishpura, Kaithal**

रहा है। इसीकारण समय के बदलाव के कारण ही फिल्मों के विषयों में भी इसी प्रकार के बदलाव देखने को मिलतें रहें है। जहॉ पर प्रारम्भिक दौर में पौराणिक और धार्मिक कहानीयों पर फिल्में बनती थी। वहीं पर व्यापरिक और आकर्षित विषयों को महत्व दिया जाने के कारण ये विषय बाद के वर्षो में बहुत कम चुने जाने लगे है।

3 मई 1913 को दिन भारतीय सिनेमा के लिए सुनेहरी दिन रहा क्योंकि इसी दिन भारतीय सिनेमा के परोदा दादा साहब फालके की मूक फिल्म 'राजा हरिशचन्द्र' फिल्म रिलीज हुई। वास्तविक अर्थो में दादा साहब पहले स्वदेशी फिल्मकार थे। इन्होंने मोहिनी भास्मासुर 1913 में, सत्यवान सावित्री, लंका दहन 1914 में ही रिलीज की और 1931 में भारत की पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' को प्रदर्शित किया गया। इसी प्रकार रंगीन फिल्म 'किसान कन्या' के साथ भारतीय सिनेमा रंगीन रूप दिखाई देने लगा। समाज की संकीर्ण सोच को बदलने में फिल्मो ंको अतुलनिय योगदान भी रहा हैं। जागीरदारी और तानाशाहों के जुल्मों से जनता को बचने और उन में जागरूकता लाने में अनेक फिल्मकारों ने विशर्मनिय योगदान दिया है। एक समय रहा जब समाज की बुराईयों को उजागर किया। इन में अछुत कन्या, प्रेम रोग, गुलामी, प्रेमग्रन्थ, युगान्तर, आदि इसी प्रकार चेतल आनन्द की 'नीचा नगर' में कामगारों ओर मालिकों के बीच संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से दिखाया गया। ख्वाजा अहमद अब्बास की 'धरती के लाल' में सामाजिक यथार्थ का अभूतपूर्व चित्रण दिखाया गया। पचास के दशक में दो बीघा जमीन, दो आंखे बारह हाथ, आवरा , श्री 420, जागते रहें, जिस देश में गंगा बहती है।, गंगा जमुना, मदर इंडिया की सफलता ने भारतीय सिनेमा की नबज को हिंदी फिल्म निर्देशकों ने भली–भांती से पकड़ लिया। अच्छे संगीत और गायकारों तथा कलाकारों के कारण फिल्म उद्योग को एक अलग पहचान मिलने लगी।

राजनैतिक विषय पर बात की जाए तों आज के इस दौर में राजनीति को नकारा नही जा सकता। फिल्म उद्योग भी राजनैतिक पृष्ठ वाली फिल्मों से अछुता नहीं रहा। इसी कड़ी अनेक फिल्में बनी जिन्होंने खुब भीड़ तथा वाह–वाही लूटी। इन में शंघाई, राजनीति, आंधी फिल्में दर्शकों को बहुत पसंद आई थी। इसी प्रकार गीतकार गुलजार भी अपनी फिल्मों में राजनीतिक ताने–बाने को प्रयोग करते रहें है। उनकी निर्देशित आंधी हो या फिर हू तू तू दोनों में ही राजनेताओं की व्यक्तिगत उलझनों को उभारने की उंमदा कोशिश की ओर सफल भी रहें। इन फिल्मों में राजनीति के साथ साथ प्रेम संबंध ओर सांठ–गांठ को बड़ी खुबशुरती के साथ दर्शाया और भरपूर डामा महसूस करवाया गया।

छठे व सातवें दशक में खुब मसालेदार फिल्मों के दौर में भी 'लीडर', 'आज का एमएलए रामअवतार' और 'मैं आजाद हूं' को दर्शकों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। 'लीडर' दिलीप कुमार की भूमिका वाला पहली हिंदी फिल्म थी, जिसमें राजनेताओं के निजी स्वाथों का बेबाकी के साथ दर्शाया गया था। राजनैताओं के गिरते स्तर को 'आज का एमएलए रामअवतार' में दिखाया गया। इसी प्रकार 'किस्सा कुर्सी का' का भी उल्लेखनीय योगदान रहा। राजनैतिक विषय वाली फिल्मो की श्रेणी में 'शुल' में बिहार में व्याप्त राजनीतिक गुंडागर्दी को दिखया गया। जिस में एक पुलिस अधिकारी को राजनीति और गुंड़ागर्दी में लिप्त राजनैतिज्ञों से संघर्ष करते दिखाया गया। इस श्रेणी मे अनील कपूर अभिनीत 'नायक' की कहानी कल्पनात्मकता का अनोखा रूप दिखा। परन्तु यह राजनेताओं की जिम्मेदारी और प्रभावी तरीके से काम करने के तरीके को दिखाती है। मणिरतन्म ने 'युवा' फिल्म के द्वारा छात्र–राजनीति को अपने नजरिए से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया। 'युवा' में यदि राजनीति, अपराध, और छात्र–आंदोलन का ताना–बाना बुना गया, तो युवा फिल्मकार तिग्मांशू धुलिया निर्देशित 'हासिल' से उतरप्रदेश की छात्र–राजनीति का वास्विक चित्रण किया गया। अनुराग कश्यप की 'गुलाल' में जड़ और सामंती सोच, वाली छात्र राजनीति को चित्रित किया गया।सुधीर मिश्रा की 'हजारों ख्वाहिशें ऐसी' राजनीति से अधिक राजनीतिक विचारधारा पर केंद्रित थी। इस पूंजीवादी और समाजवादी विचारधारा के पक्षधर केंद्रीय पात्रों को ध्यान में रखकर बनी फिल्म का प्रयोग काफी गंभीर था। पूंजीवादी सोच के पैरोकार शख्स के बेटे का किरदार के. के. मेनन ने निभाया था। के. के. मेनन समाजवादी विचारधारा के पक्षधर के रूप में थे, जबकि शाइनी आहूजा घोर पूंजीवादी सोच के रहते है। ये सब फिल्में विभिन्न वर्ग के दर्शको की नब्ज टटोलने व उनके दिल को छूने में कामयाब रही। 'राजनीति' में पारिवारिक व राजनैतिक कुटनीति को दर्शाया गया। यदि सच कहें तों आज की स्थीति में अभिनेत्रियों और अभिनेताओं को इसप्रकार के किरदार भा रहे है। अभिनेताओं को भी वैसी भूमिकाओं से उम्दा अदाकार के तौर पर खुद को स्थापित करने का असरदार तरीका महसूस होता है। यही वजह है कि माधुरी दीक्षित, जूही चावला जैसी परिपक्व व अनुभवी हीरोइन से लेकर सोनम कपूर, प्रियंका चोपड़ा जैसी नई हीरोइन भी चुनाव व राजनीति की पृष्टभूमि पर बनी फिल्मों में दिलचस्पी दिखा रही है। कटरीना कैफ को भी लोगों ने 'राजनीति' में स्वीकारा। उनके कोस्टार और चॉकलेटी चेहरे के मालिक रणबीर कपूर भी मंझे हुए राजनेता के तौर पर प्रभावी लगे। 'शंधाई' में नौकरशाह बने अभय देओल तो नायाब लगे ही, 'यंगीस्तान' में युवा प्रधानमंत्री बने जैकी भगनानी को भी उस किरदार से स्थापित

अभिनेता बनने का भरोसा दिया। यदि यह कहे की आज के इस दौर में समाज के लिए राजनीति जितनी अधिक उपयोगी है। फिल्म उद्योग में भी फिल्मों की सफलता का एक मूल मंत्र बनती जा रही हैं राजनीति आधरित फिल्में। प्रत्येक फिल्म में किसी न किसी किरदार को राजनीतिक अभिनय करते हुए दिया जाता है। चाहे वह गंगाजल हो या मिलटरी राज या युगांतर आदि अनेक फिल्में है। जो राजनीति से प्रेरित किरदारों को दिखया जाता है।राजनीति आम जन की रूचि का विषय है। ओर हो भी क्यों नहीं क्योंकि राजनीति व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष पर प्रभाव ड़ालती है। इसी के कारण फिल्म भी चर्चा का विषय बन जाती हैं। साथ ही फिल्म के किसी किरदार या दर्शय को किसी राजनेता के साथ जोड़ कर दिखाया जाता हैं तों उस के कारण वह फिल्म पर भी प्रतिबंध या उस विरोध होना आरम्भ होने को कारण वह मीडिया में चर्चा के साथ साथ जन मानस के लिए जिज्ञासा के साथ उसे देखने के लिए भी प्रेरित करती हैं।समाजिक जीवन में राजनीति का जितना अधिक प्रभाव पड़ता है। उसी प्रकार फिल्म की सफलता और विफलता को भी राजनीति के द्वारा गंभीरता के साथ प्रस्तुत कर सफलता दिलवाने के लिए अवश्य समाहीत किया जाता है। फिल्में मसालेदार हो तो खुब वाह वाही लूटती है। और राजनीति पृष्ठभूमि आधारित फिल्मों में मसाला ही मसाला होता है। दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए और व्यवसाय आधारित फिल्मों के द्वारा अधिक मुनाफा कमाने के लिएयह उपयोगी विषय है।

फिल्मों में अपराध की एक अनोखी दुनिया को दिखाया जाता हैं। जिस में अपराधीक किरदार निभाने वाले व्यक्ति को प्रभावशाली दिखाया जाता हैं। अनेक फिल्में तों अंडरवल्ड़ को बारीकी से दिखाती हैं। परन्तु ये फिल्में जहां अपराधिक विषय पर होती है। साथ ही ये दर्शको को अपराध करने के नए नए तरीकें भी सीखाती है। अनेक बार समाचार पत्रों में पठने को मिलता है कि फिल्मी अंदाज में इस अपराधीक घटना को अंजाम दिया गया। चाहे वह 'शालीमार' हो या ''डॉन'' , 'धूम' या 'जॉनी मेरा नाम' आदि अनेक तरीके बतलाती हैं

संदर्भ ग्रंथावलीः–

1. महेन्द्रमित्तल, भारतीय चलचित्र, दिल्ली 1975

2. भारत 2014, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली 2014

3. हरमल सिंह, फिल्में कैसे बनती है।.

4. विलबर श्रम, मास मीडिया एण्ड नेशनल डेवलपमेन्टए स्टेनफोर्ड युनीवर्सिटी प्रेस.

5. Chidanada Dasgupta, Talking about Films, Bomby: Orient Longman, 1977.

6. B. D. Garga, So Many Cinema: The Motion Picture in India, Bombay; Eminence Designs Pvt. Ltd, 1996

7. M. A. Oomen and K. V. Joseph, Economics of film Industry in India, Bombay, Academy Press 1981.

8. Gaston Roberg, Another Cinema for Another Society, Calcutta, seagull Books, 1985

9. Satyajit Ray, Our Films, their films, Bombay, Orient Longman.

10. Aruna Vasudev, The New Indian Cinema, New Delhi, Macmillan, 1996.

11. Wimal Dissanayak and Malti Sahai, Raj Kapoor's Films, Harmony of Discourse, New Delhi, Vikas 1988.

12. www.enwikipedia/cinema

13. www.newsonair.nic.in/100-years-of-indian-cinema/

14. www.historyindia.com

15. Keval.J.Kumar, Mass communication in India, Jaico Publishing House, 2000

16. Roger D. Wimmer & Joseph R. Dominick, Mass Media Research: An Introduction, 9th Edition.